Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 8 ~ Issue 10 (2020) pp: 72-76
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल तथा तत्कालीन भारतीय शैक्षिक प्रयास

डॉ. अपर्णा त्रिपाठी,

एसो.प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, ए.के.पी.जी.कॉलेज,हापुड़

सारांश:
ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में कला-संस्कृति-अर्थव्यवस्था-शिक्षा संपन्न भारत का अंधाधुंध शोषण हुआ जिससे उसका परंपरागत आधारभूत राष्ट्रीय ढांचा जीर्ण-शीर्ण हो गया। अनेक राष्ट्रभक्त, विद्वान, प्रबुद्धजन इस पतन और दुर्दशा के साक्षी बने और अनुभव किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के अन्य प्रयासों के साथ-साथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था को पुनः आरंभ करना और सुदृढ़ करना भी अत्यंत आवश्यक है ताकि षडयंत्रपूर्वक विलुप्त किए जा रहे परंपरागत गौरव,संस्कृति को संरक्षित रखते हुए,भावी पीढ़ियों तक स्थानांतरित किया जा सके और स्वाधीनता हेतु राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया जा सके।

संकेत शब्द: उपनिवेश, स्वाधीनता, स्वराज,आर्य समाज, राष्ट्रीय शिक्षा,राष्ट्रीय विद्यालय, बुनियादी शिक्षा

Received 01 October, 2020; Accepted 28 October, 2020 © The author(s) 2020.
Published with open access at www.questjournals.org

भारत प्राचीनकाल से एक समृद्धशाली/समृद्ध राष्ट्र रहा है। भारत के सांस्कृतिक धरोहर, आर्थिक समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति ने संसार को आकर्षित किया है। प्राचीनकाल में भारतीय समृद्धि एवं संस्कृति का व्यापक रूप से प्रचार हो चुका था। ऐसे में विश्व की दृष्टि प्राचीन काल से ही भारत की ओर रही है।अनेक पश्चिम एशियाई देशों से भारत के सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंध रहे। पश्चिमी राष्ट्रों ने व्यापार की आड़ में, नए देशों में पहुंचकर अपना प्रभाव स्थापित किया, व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त कीं और धीरे-धीरे साम्राज्य स्थापित कर लिया। 17 वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत भूमि के प्रति यूरोपियों का आकर्षण इन्हें इस प्राचीन देश की ओर खींच लाया। उस समय भारत संसार के सबसे धनी देशों में से एक था। कुछ अंग्रेज इतिहासकारों ने अंग्रेजों के भारत आने का उद्देश्य भारतीयों को सभ्य बनाना बताया है लेकिन वास्तविकता यह है कि उपनिवेश स्थापना,धन की प्राप्ति, व्यापार में वृद्धि और ईसाई मत का प्रचार करना ही इनका प्राथमिक उद्देश्य था जो आगे चलकर राजनैतिक प्रसार व साम्राज्यवाद में बदल गया। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की स्थापना छल कपट अत्याचार व शोषण से हुई। परिणाम स्वरूप यहां की सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को गहन क्षति पहुंची। कलुषित उद्देश्यों की अति हो जाने से भारतीयों में भय और असंतोष बढ़ने लगा जिसके फलस्वरूप विभिन्न विद्रोह प्रकट हुए। भारत के पुनर्जागरण काल में भारत के गौरवशाली अतीत को उजागर कर भारतीयों के मन मस्तिष्क में आत्म सम्मान की भावना जागृत करने के प्रयास भी किए गए ताकि स्वाधीनता आंदोलन को गति प्रदान की जा सके। यह वह समय था ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित स्कूलों में ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने वालों बच्चों को निशुल्क शिक्षा दी जाती थी, शिक्षाके नाम पर धर्म प्रचार किया जा रहा थ, धन के अभाव में देसी पाठ शालाओं की अवनति हो रही थी।धर्म और संस्कृति की रक्षा के

लिए जो कि ईसाई मशीन मिशनरियों की कुदृष्टि सुरक्षित नहीं थे, धार्मिक और सामाजिक आंदोलन आवश्यक प्रतीत होने लगे। इन प्रयासों में अनेक शैक्षिक प्रयास भी सम्मिलित थे। प्रस्तुत लेख में केवल भारतीय प्रयासों को सम्मिलित किया गया है क्योंकि सरकार द्वारा किए गए प्रयास प्रमुखतया उनकी अपनी नीतियों और पूर्वाग्रहों से संचालित थे। इनका कोई भी संबंध स्वाधीनता संग्राम से नहीं था। उनके शैक्षिक प्रयास स्वयं को सत्ता में बनाए रखने के लिए किया गया, दिखावा-छलावा था। अनेकों आयोग, समितियों का गठन सरकार द्वारा किया गया किंतु बहुत कम को फलीभूत होते हुए देखा जा सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी शासन के शैक्षिक प्रयासों का उद्देश्य शिक्षा की व्यवस्था करना नहीं अपितु भारतीयों का मन बहलाव और कार्य विलंबन था। अंग्रेजी शासन द्वारा स्थापित संस्थाओं का मुख्य विषय और माध्यम भी अंग्रेजी और यूरोपीय व्यवस्थाएं ही थीं। ये संस्थाएं "निस्यंदन सिद्धांत" पर कार्य कर रही थीं, इनका उद्देश्य केवल अपने लिए नौकरों को तैयार करना था। शिक्षा के सार्वजनिक प्रचार प्रसार अथवा भारतीय जन मानस के विकास को, इन शैक्षिक कार्यों का उद्देश्य मानना नितांत मूर्खता होगी। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भारतीय शैक्षिक प्रयासों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है -

राजा राममोहन राय पुनर्जागरण के अग्रदूत माने जाते हैं। 1815 में राजा राममोहन राय द्वारा कोलकाता में "आत्मीय सभा" की स्थापना की गई तथा 1925 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की गई। राजा राममोहन राय का मानना था कि आधुनिक विचार के प्रसार के लिए आधुनिक शिक्षा आवश्यक है। अपनी शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा दिया। 1817 में उन्होंने "कोलकाता समाज" की स्थापना की जिसका कार्य कम मूल्य पर पाठ्य- पुस्तकें तैयार करना था। इसी क्रम में 1819 में कोलकाता विद्यालय समाज की स्थापना हुई जिसने कोलकाता क्षेत्र में 115 स्कूलों की स्थापना की। राजा राममोहन राय से प्रभावित होकर जयनारायण। घोषाल ने 1818 में "जयनारायण स्कूल" की स्थापना बनारस में की। इसने भी पुनर्जागरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1848 में पुणे में भारत में प्रथम बार लड़कियों की शिक्षा के लिए कन्या शाला के स्थापना महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा की गई। ज्योतिबा फुले और उनकी धर्मपत्नी सावित्रीबाई ने एक प्राण होकर होकर, विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए, स्त्री शिक्षा के अपने मिशन को पूरा किया। अनेक व्यवधान, अड़चनों, लांछन और बहिष्कार के बावजूद इस दंपत्ति ने शोषित और दलित कन्याओं के लिए एक के बाद एक अनेक पाठशालाये खोलीं।

"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" का नारा देने वाले लोकमान्य तिलक अपने विद्यार्थी जीवन में ही यह तय कर चुके थे कि मातृभूमि का उद्धार केवल शिक्षा द्वारा ही संभव है। एक जनवरी 1880 को चिपलुनकर, तिलक और अगरकर द्वारा "न्यू इंग्लिश स्कूल" की स्थापना की गई। बिना सरकारी सहयोग से चलने वाला यह विद्यालय कम समय में ही अनेक कीर्तिमान स्थापित करने लगा। इसकी सफलता और लोक कल्याण के कार्यो के कारण तिलक और सहयोगियों ने साथ 1884 में डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य विद्यालयों के व्यय को कम करना तथा विद्यालयों व महाविद्यालयों को देशी प्रबंध के अंतर्गत एक सूत्र में संयुक्त करना था। तिलक मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में थे ताकि विद्यार्थियों के समय, श्रम एवं बुद्धि का सदुपयोग हो सके। तिलक की राष्ट्रवाद की स्थापना की अवधारणा में "राष्ट्रीय शिक्षा" को स्वराज व स्वदेशी के साथ महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। 1889 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीय चेतना का शंख नाद किया। तिलक मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में थे ताकि विद्यार्थियों के समय, श्रम एवं बुद्धि का सदुपयोग हो सके। तिलक का मत था कि देवनागरी लिपि तथा हिंदी भाषा देश की राष्ट्रभाषा बने। उनके अनुसार शिक्षा के प्रसार तथा राष्ट्रीय एकता हेतु एक भाषा के व्यवहार से अधिक शक्तिशाली और कोई माध्यम नहीं है। जन जागृति के उद्देश्य से तिलक ने केसरी और मराठा समाचार पत्रों का प्रकाशन आरंभ किया। उन्होंने गणपति व शिवाजी उत्सवों के माध्यम से जनता में राष्ट्रीयता की भावना विकसित की तथा राजनीतिक शिक्षा प्रदान की।

*Corresponding Author: **डॉ.अपर्णा त्रिपाठी**

आर्य समाज का उदय ब्रिटिश साम्राज्य में पाश्चात्य विचारधारा के प्रभावों के प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। यह डेक्कन एजुकेशन सोसायटी से भी प्रभावित था। शिक्षा क्षेत्र में आर्यसमाज ने उल्लेखनीय कार्य किया। 1886 में लाहौर में दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना हुई जो 1889 में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज के रूप में अस्तित्व में आया। देश के विभिन्न भागों में दयानंद एंग्लो वैदिक संस्थाओं का विस्तार हुआ। स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

स्वामी विवेकानंद, जिनके शिकागो भाषण को सुनने के बाद न्यूयॉर्क हेराल्ड ने यह टिप्पणी की थी- "शिकागो धर्म सम्मेलन में विवेकानंद ही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं उनके भाषण सुनने के बाद लगता है कि भारत जैसे समुन्नत राष्ट्र में ईसाई प्रचारकों को भेजा जाना कितनी मूर्खता की बात है",ने 1896 में वेदांत सोसाइटी तथा 1897 में वेल्लूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसकी शाखाएं देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों में खोली गईं। इस मिशन की शाखाओं और इसके द्वारा स्थापित विद्यालयों के माध्यम से उन्होंने वेदांत दर्शन की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार किया।

वैदिक शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्रदान करने तथा पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विरोध स्वरूप 1902 में हरिद्वार के पास कांगड़ी में गुरुकुल स्थापित किया गया जिसने भारतीय संस्कृति की उपलब्धियों को बताते हुए भारतीयों के मन में आत्मगौरव का भाव उत्पन्न किया।

1901 बोलपुर में रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा "ब्रह्मचारी आश्रम" नामक एक विद्यालय की स्थापना की गई जिसे 1921 में विश्वभारती विश्वविद्यालय के नाम से पुकारा गया। शिक्षा साहित्य और समाज में योगदान के लिए टैगोर सदैव याद किया जाता है।

बंगाल विभाजन(1905) के निर्णय का विरोध करते हुए 1905 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में राष्ट्रीय आंदोलन शुरू किया गया जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा को स्वराज्य, स्वदेशी और बहिष्कार के साथ प्रमुख स्थान दिया गया। इस आंदोलन में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, पंडित मदन मोहन मालवीय, गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर और श्री अरविंद ने भाग लिया। यहां राष्ट्रीय शिक्षा के संदर्भ में यह प्रस्ताव पास किया गया-"अब वह समय आ गया है जब संपूर्ण भारत के व्यक्ति बालक बालिकाओं की राष्ट्रीय शिक्षा के बारे में ईमानदारी से सोचें और उसका देश की आवश्यकतानुकूल संगठन करें।"राष्ट्रीय नेताओं द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा को आधारभूत सिद्धांतों पर विकसित करने की बात की गई-

- भारत शिक्षा भारतीय नियंत्रण में हो
- शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श भारतीय हों
- मातृभूमि के प्रति प्रेम और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा होना चाहिए यह तभी संभव है जब प्रारंभ से ही स्वदेशी भाषा साहित्य और इतिहास का ज्ञान कराया जाए
- अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त किया जाए
- व्यावसायिक विषयों का शिक्षा में समावेश कर, जीविकोपार्जन योग्य नागरिक तैयार किए जाएं। लाला लाजपत राय का मत था कि लोक शिक्षा का प्रथम उद्देश्य भारत के नागरिकों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना होना चाहिए। सभी राष्ट्रीय नेता इस बात पर सहमत थे कि शिक्षा का प्रसार जन-जन तक तब तक संभव नहीं, जब तक इसका माध्यम अंग्रेजी है इसलिए उन्होंने मातृभाषा अर्थात क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया।
- राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित करते समय यह विचार किया गया कि अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से पाश्चात्य भाषा, साहित्य और विज्ञानों को भी पाठ्य विषयों में सम्मिलित किया जाए।

भंग भंग के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन में अध्ययनरत छात्रों ने भी प्रतिभागिता की। आंदोलन के दमन के उद्देश्य से लॉर्डकर्जन ने यह आदेश दिया कि जो विद्यार्थी आंदोलन में भाग लेंगे, उन्हें शिक्षा संस्थाओं से निकाल दिया जाएगा। परिणाम स्वरूप हजारों विद्यार्थी शिक्षण संस्थानों से निकाल दिए गए, कुछ ने स्वेच्छा से विद्यालयों में पढ़ना छोड़ दिया और इस आंदोलन में सम्मिलित हुए। राष्ट्रीय नेताओं ने इन युवकों की शिक्षा

व्यवस्था हेतु प्रयास किए। बंगाल में गुरूदास बैनर्जी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार समिति का गठन हुआ इस समिति ने पूर्वी और पश्चिमी बंगाल में अनेक राष्ट्रीय हाई स्कूल स्थापित किए। इस समिति ने एक टेक्निकल इंस्टिट्यूट भी खोला जो आगे चलकर जादवपुर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के रूप में विकसित हुआ। गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर, रास बिहारी बोस और अरविंद घोष ने कोलकाता में राष्ट्रीय कॉलेज स्थापित किया। इन्हीं सिद्धांतों पर पुणे में समर्थ विद्यालय खोले गए। आर्य समाज द्वारा गुरुकुल और डीएवी कॉलेजों की स्थापना का उल्लेख भी यहां पर महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय विद्यालयों में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की गई व जीवन उपयोगी विषयों व कौशलों को मुख्य स्थान दिया गया। देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना का विकास इनका मुख्य उद्देश्य था ही।

राष्ट्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता को बढ़ा रहे थे किंतु फिर भी सरकार इनसे प्रभावित नहीं हुई। इसी बीच तत्कालीन बड़ौदा नरेश शियाजीराव गायकवाड ने अपने संपूर्ण बड़ौदा राज्य में 7 से 12 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी और इस कार्य में सफल भी हुए। गोपाल कृष्ण गोखले ने उनके इस सफलता से प्रभावित होकर अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा की मांग सरकार से की और 1910 में केंद्रीय धारा सभा में प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सरकार द्वारा इस प्रस्ताव पर आश्वासन तो बहुत ही आए किंतु कदम कोई नहीं उठाया गया तो 1911 में गोखले द्वारा इसे विधेयक के रुप में प्रस्तुत किया गया जो कि केंद्रीय सभा में पास ना हो सका। किंतु इसका प्रभाव यह हुआ कि अंग्रेजों तक यह विचार स्पष्टता से पहुंच गया कि शिक्षा संबंधी अधिकारों से भारतीयों को और अधिक दूर नहीं रखा जा सकता है।

1937 में "अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन" जिसे "वर्धा शिक्षा सम्मेलन" भी कहा जाता है, के सभापति पद से बोलते हुए गांधी जी ने तत्कालीन शिक्षा को अपव्ययपूर्ण और हानिप्रद बताया। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के संबंध में अपने विचार 7 मूलभूत बिंदुओं के रूप मे व्यक्त किए -

- देश में 7 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था
- शिक्षा सभी के लिए समान हो
- शिक्षा देश की ग्रामीण आवश्यकता के अनुरूप हो
- इसमें भाषा, गणित आदि की शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को सफाई, स्वास्थ्य,रक्षा, भोजन के नियम, माता-पिता के कार्यों में हाथ बटाने की शिक्षा दी जाए ।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो
- पाठ्यक्रम में कृषि और भारतीय कौशल को सम्मिलित किया जाए
- समस्त शिक्षा हस्तकौशलों के माध्यम से दी जाए और शिक्षा को स्वावलंबी बनाया जाए

उपर्युक्त राष्ट्रीय शिक्षा योजना को अंतिम रूप देने के लिए डॉ. जाकिर हुसैन समिति का गठन किया गया जिसने इस योजना को "बुनियादी तालीम" नाम दिया।1938 के कांग्रेस अधिवेशन में इसे प्रस्तुत किया गया तथा अंग्रेजी में बेसिक एजुकेशन कहा गया। भारत में बेसिक शिक्षा की व्यवस्था भी की गई, उसके लिए धन व्यय किया गया और सुधार के प्रयास भी किए गए परंतु सैद्धांतिक रूप से उत्कृष्ट व उपयुक्त बेसिक शिक्षा, प्रयोग में आशानुरूप सफल नहीं हो सकी। परंतु इस शिक्षा व्यवस्था की कुछ बातें जैसे मातृभाषा में शिक्षण, क्रियाद्वारा शिक्षा, अनेक शिक्षा योजना में आज भी प्रासंगिक हैं। गांधी जी द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाओं,यथा-नवजीवन,यंग इंडिया, हरिजन आदि के माध्यम से जन शिक्षा हेतु प्रचार प्रसार किया गया।

1939 में आचार्य नरेंद्र देव समिति- प्रथम ने माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप को बेसिक शिक्षा के संदर्भ में निश्चित करने के उद्देश्य से अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं, किंतु इससे पहले कि इन पर विमर्श होता, 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया और अंग्रेजी उपनिवेश होने के कारण भारत को इसमें ब्रिटेन की तरफ से सम्मिलित होना पड़ा। विश्व युद्ध समाप्ति के बाद विषम वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों के कारण स्वतंत्रता प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ीं और बनीं। किंतु अंग्रेजी शासन ने जाते-जाते अपनी निकृष्टता का एक और उदाहरण

*Corresponding Author: **डॉ.अपर्णा त्रिपाठी**

प्रस्तुत किया तथा भारत विभाजन कीत्रासदी दी। और अंततः 15 अगस्त 1947 भारत के ज्ञात- अज्ञात बलिदानियों- क्रांतिकारियों- राष्ट्रभक्तों का चिर प्रतीक्षित स्वाधीनता का स्वप्न वास्तविकता में परिवर्तित हुआ।

संदर्भ

- Aurobindo Shri, A System of National Education, Calcutta , Arya publishing house 1946
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान भारत का इतिहास
- Altekar A. S. *E ducation in Ancient India.* Varanasi, Nandkishore& Brothers. 1963
- Bakshi S.R.& Mahajan, L. *Encyclopedic History of Indian Culture and Religion:Education in ancient India,* New Delhi, Deep & Deep Publications. 2000. 2011
- Lal R.B. & Sharma K.K. 'History, Development and Problems of Indian Education', R.Lal Book Depo, Meerut, 2015.

*Corresponding Author: **डॉ.अपर्णा त्रिपाठी**